रासा

आज़ादी

ई—मेल-sayamiraju@gmail.com

एक जंगल । एक कवि वहाँ भटक रहा है । अकेला। उसके साथ कोई और नहीं है ।

लंबी सैर । थकान । वह धीमा हो जाता है। सन्नाटा पसर गया।

वह एक पेड़ के नीचे बैठता है ।

चारों ओर पक्षियों की चहचहाहट।

एक क्षण के बाद ।

उसके सामने एक चिड़िया प्रकट होती है ।

उसकी दृष्टि चिड़िया पर केन्द्रित हो गई । एकाग्र ।

तत्काल कवि चिड़िया से पूछता है—

"तुम यहाँ क्यों आई हो ?"

चिड़िया बोली—"यह हमारा आशियाना है ।"

"सच में! तुमको क्या पसंद है?"

"इन पेड़ों को पसंद करती हूँ, पूरे जंगल को पसंद करती हूँ"—चिड़िया का जवाब।

कवि नि:शब्द ।

चंचल चिड़िया ।

पुनः सवाल-जवाब ।

"क्या तुमको सूरज या पानी पसंद है?"—कवि के प्रश्न जमीन पर गिरने से पहले ही चिड़िया मुखर हो जाती है—

"दोनों ही नापसंद, परन्तु अनिवार्य हैं..."

ऐसा कहकर चिड़िया चुप हो जाती है।

कवि वहाँ से उठकर चलने लगता है।

जाने की कोशिश करते हुए कवि आखिरी सवाल पूछता है—

"तुमको सबसे ज्यादा क्या पसंद है?"

"आकाश!"

यह कहकर चिड़िया उड़कर आकाश में ओझल हो जाती है।

हवा बहती है। पेड़ आहें भर रहे हैं। वे आहें भरते रहते हैं।

हिन्दी अनुवाद : लेखक द्वारा स्वयं

काठमाडौं, नेपाल में रहने वाले रासा का पूरा नाम राजु सायमी है । वे निजी व्यवसायी हैं और स्वतन्त्र लेखक हैं। उनकी अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । यह स्वतन्त्र लघुकथा है ।